Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 5 | ISSN : 2582-0095

वेदों में कृषि विज्ञान

नज़मी गौहर
शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग,
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय,
प्रयागराज उत्तर प्रदेश

डॉ0 देवानारायण पाठक
संस्कृत विभागाध्यक्ष
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय,
प्रयागराज उत्तर प्रदेश

Article Info
Volume 4 Issue 5
Page Number: 59-62

Publication Issue :
September-October-2021

Article History
Accepted : 01 Sep 2021
Published : 30 Sep 2021

सारांश– वर्तमान समय में लोगों ने कृषि को व्यापार का एक जरिया (साधन) बना रखा है। कृषि में अत्यधिक मशीनों एवं रसायनिक खाद्यों का प्रयोग किया जाने लगा है जिससे पैदावार अधिक से अधिक किया जा सके भले ही वो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक ही क्यों न हो परन्तु इसके विपरीत वैदिक कालीन कृषि में खाद्य के रूप में गोबर खाद्य एवं घर के गीले कचरे से खाद्य बनाकर खेती होती थी। वैदिक कालीन कृषि आधुनिक कृषि की तुलना में ज्यादा सुरक्षित एवं स्वास्थ्य के लिए हितकर थी।

मुख्य बिन्दु– कृषि विज्ञान, वेदों में कृषि विज्ञान, वेदों में सिचाई, पशु पालन, वेदों में बीज बोने की शिक्षा।

वेद, समान्यतः अधिकांश लोग वेद से परिचित हैं वेद शब्द विद् धातु से घञ (अ) प्रत्यय करने पर बनता है, जिसका अर्थ है ज्ञान अतएव वेद शब्द का अर्थ हुआ ज्ञान की राशि या ज्ञान का संग्रह ग्रन्थ। सायण आचार्य ने वेद की व्याख्या करते हुए लिखा है ''ईष्ट प्राप्त्यनिष्टपरिहारयोर–लौकिकमुपायं यो ग्रन्थो वेदयति स वेदः''[1] अर्थात् जो ग्रन्थ ईष्ट प्राप्ति और अनिष्ट निवारण का अलौकिक उपाय बताया है उसे वेद कहते हैं दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि जो हमें अच्छे और बुरे के बारे में ज्ञान दे वह वेद है। वेद चार हैं ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद।

ऋग्वेद सबसे प्राचीन वेद एवं अथर्ववेद सबसे बाद का वेद है। इन चारों वेदों के अतिरिक्त चार उपवेद हैं, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्ववेद, अर्थवेद इसी प्रकार यज्ञों की व्याख्या एवं विवरण प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थों को ब्राह्मण ग्रन्थ कहते हैं सभी वेदों के ब्राह्मण ग्रन्थ है जैसे ऋग्वेद–ऐतरेय ब्राह्मण, शाखायन ब्राह्मण, यजुर्वेद– शतपथ ब्राह्मण, तैत्तिरीय ब्राह्मण, सामवेद– पंचविश ब्राह्मण, अथर्ववेद– गोपद ब्राह्मण।

ब्राह्मण ग्रन्थों के बाद आरण्यक ग्रन्थ आते हैं। आरण्यक ग्रन्थ जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि जंगल अर्थात् जिसका अध्ययन अध्यापन घर से दूर जंगल में किया जाये, उसे आरण्यक ग्रन्थ कहते है।

आरण्यकों के बाद उपनिषद् आते है उपनिषद् शब्द उप, नि उपसर्ग पूर्वक सद् धातु से क्विप् प्रत्यय करने पर बनता है। उप का अर्थ है समीप, नि का अर्थ है निष्ठापूर्वक तथा सद् धातु का अर्थ बैठना। इस प्रकार उपनिषद् का अर्थ हुआ तत्त्व ज्ञान के लिए गुरू के पास निष्ठापूर्वक बैठना। तत्त्व ज्ञान के प्रतिपादन के कारण ही इन ग्रन्थों को उपनिषद् कहते हैं। 108 से 200 तक उपनिषद् माने जाते हैं लेकिन इनमें केवल ग्यारह ही मुख्य उपनिषद् हैं–

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

ईश–केन–कठ–प्रश्न–मुण्ड–माण्डूक्य–तैत्तिरीय–ऐतरेय, वृहदारण्यक–छान्दोग्य उपनिषद्।

उपनिषद् के बाद वेदाङ्.ग आते हैं वेदाङ्.ग का अर्थ है वेदों के अंग अर्थात वेदों के वास्तविक अर्थ ज्ञान के लिए जिन साधनों का उपयोग करते हैं उन्हें वेदाङ्.ग कहते है। वेदाङ्.ग 6 हैं– शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष। इन्ही की सहायता से वेदों को पढ़ना लिखना सरल हो गया है।

कृषि विज्ञान – वह विज्ञान जिसमें खेती बारी, जोताई, बोआई, फसलों को बोना काटना, पशुओं को पालना इत्यादि का अध्ययन किया जाता है वह कृषि विज्ञान है।

वेदों में कृषि विज्ञान

ऋग्वेद में कृषि विज्ञान का गौरवपूर्ण वर्णन मिलता है–

''अक्षैर्माः दीव्यः कृषिमित् कृषस्व वित्ते रमस्व बहुमन्य मानः।[2]

''आर्थात् जुआ मत खेलो कृषि करो और सम्मान के साथ धन पाओ।''

वैदिक काल से ही बीजवपन, कटाई, बोआई, जोताई होती आ रही है। इसके लिए हल, हसिया, छाननी आदि उपकरण का उपयोग वैदिक काल से ही होता आ रहा हैं।

कृषि, कृषि औजार एवं कृषि की पद्धति इन सब का ज्ञान वेदों में बीज रूप से समन्वित है जैसा कि ऋग्वेद में एक सूक्त है–

''युनक्त सीरा वि युगा तनुध्वं कृते योनौ वपतेह बीजम्।

गिरा च श्रुष्टिः सभरा असन्नो नेदीय इतसृण्यः पक्वमेयात्।''[3]

अर्थात् हल चलाइए जोड़ियों को जातिए। जमीन तैयार होने पर उसमें बीज बोइए और धान काटने के हंसिया निश्चय से पके हुए धान के पास ही ले जायें। इसमें प्रशंसायुक्त भरणपोषण के साथ सफलता हम सबको होगी।''

''कृषन्तो हस्मैव पूर्वे, वपन्तो, यन्ति, लुनन्तो, अपरे मृणन्तः'' ।[4]

अर्थात् हल चलाते हैं बीज बोते हैं, (लूनन्त) धान काटते है धान कूट कर साफ करते हैं इस प्रकार हल चलाने के पश्चात् धान घर में लाने तक की प्रक्रियाएं है।

''तवेदिंद्राहमाश साहस्ते दात्रं च नादनदे।। दिनस्य

वा मधवन्त्संभृतस्य वा पूर्धि यवस्य काशिना।।''[5]

हे इन्द्र! तेरे ऊपर विश्वास रख कर ही मैं यह हांसिया हाथ में ले रहा हूँ। अब हे मधवन्! दिनभर इकट्ठा किये हुए जौकी राशि के विभाग से मुझे भरपूर कर।

कृषि कृषस्व।[6]

'खेती कर' यह आज्ञा वेद दे रहा है।

''माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः''[7]

भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ। यह भाव वेद में स्पष्ट है।

सक्तुमिव तितउना पुनन्तोः।[8]

सत्तुको जैसे (तितउना) छाननी से शुद्ध करते हैं।

कृषिर्धन्या कृषिर्मेध्या जन्तूनां जीवनं कृषिः।[9]

कृषि सम्पत्ति और मेधा प्रदान करती है और कृषि ही मानव जीवन का आधार है।

उपर्युक्त सूक्तो में धान की खेती एवं फसल काटने के लिए हंसिया, खल, छाननी का उल्लेख मिलता है। इससे स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में धान की खेती होती थी। वैदिक काल में गेंहूँ, जौ, धान, माष, तिल आदि बोए जाते थे। इससे स्पष्ट है कि वैदिक काल में जीवन का मुख्य आधार कृषि ही थी।

वेदों में खेती की जोताई– ऋग्वेद के समय में कृषि एक महत्वपूर्ण व्यावसाय बन चुकी थी। कृषि लोगो की जीविका का मुख्य आधार थी। इसके साथ ही लोग कृषि को और अधिक बढ़ाने के लिए लकड़ी एवं धातु से बने हल का उपयोग करते थे और इनको बैलों द्वारा जोता जाता था। हल के उपयोग का उल्लेख अथर्वकाण्ड 3 में एक सूक्त में मिलता है–

''सीरा युजन्ति कवयो युगा वि तन्वते पृथक।

धीरा देवेषु सम्नया।''[10]

''अर्थात् बुद्विमान ज्ञानी दैवी सुख प्राप्त करने के उद्योग में हलों को जोतते हैं और जुओं को अलग करके फैलाते हैं।'' वैदिक काल में नक्षत्र एवं काल के निरीक्षण के आधार पर खेतों की जोताई होती थी। वैदिक काल में भी खोदाई के लिए फावड़ा का उपयोग होता था।

वेदों में सिंचाई– वैदिक काल में भी सिंचाई की अलग से व्यवस्था रहती थी। वैदिक काल में सिंचाई के लिए नदी, तालाब, नहर व कुँए का उपयोग होता था। ऋग्वेद में सिंचाई के लिए सूक्त है–

''तेन मामुप सिंचतम्'' अर्थात इस भूमि को सींचो।''[11]

''नमःकूप्या'',[12] ''कूपाभ्यां स्वाहा''[13]

अतः स्पष्ट है कि सिंचाई के लिए वर्षा जल एवं कुंए का भी उपयोग होता था।

वेदों में बीज बोने की शिक्षा– वैदिक काल में बीज बोने का भी उल्लेख मिलता है जैसा कि यजुर्वेद में आया है–

''योनौ वपतेह बीजम्''[14] अर्थात लकीरे बनाकर यहाँ बीज बोओ।''

कैसा अन्न खाना चाहिए इसका भी उल्लेख यजुर्वेद में मिलता है–

''नेदीय इतसृण्यः पक्वमेयात्''[15] अर्थात खेतों में उत्पन्न हुए ''यव'' आदि अन्न जो पदार्थ इनमें (नेदीय) अत्यन्त समीप पका हुआ ही काम में लाओ।''

वैदिक काल में मुख्य अन्न गेहूँ, धान, माष, तिल आदि बोये जाते थे।

पशुपालन– वैदिक काल में पशुपालन भी कृषि का महत्वपूर्ण अंग था। पशु कृषि के कार्यों में उपयोग किये जाते थे। जिनमें बैल मुख्य पशु था जिसका उपयोग हल में जोत कर खेतों में जोताई की जाती थी। जैसा कि यजुर्वेद के निम्न सूक्त से स्पष्ट होता है–

''शुनं वाहाः शुनं नर शुनं कृषतु लागंलम्।

शुनं वस्त्रा बध्यनतां शुनमष्ट्रामुदिङ्गयः।।''[16]

अर्थात् बैल आदि पशु सुख से रहें। किसान तथा अन्य मनुष्य आनन्द से रहे। हल सुख से जोते जाये, हल की रस्सियाँ सुख से बांधी जायें, चाबुक आनन्द से प्रेरित किया जाये।'' यहाँ स्पष्ट है कि खेती के लिए, बैल, हलवाहा रस्सी, चाबुक तथा हल की फाल बैल का उपयोग होता था। इसके अतिरिक्त गाय, बकरी दूध के लिए, भेड़– ऊन के लिए पाले जाते थे।

उपसंहार– वैदिक काल के कृषि का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि वैदिक कालीन कृषि प्राकृतिक थी। वैदिक काल में खाद्य के रूप में गोबर खाद्य का उपयोग किया जाता था जबकि आधुनिक कृषि में

अधिकतर रसायनिक उर्वरकों का उपयोग किया जाता है जो पैदावार को बढ़ाते हैं परन्तु स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक हैं। अतः स्पष्ट है कि वैदिक काल की कृषि आधुनिक कृषि की तुलना में ज्यादा सुरक्षित एवं स्वास्थ्य के लिए हितकर थी। अधिकांश लोग मानते हैं कि वेदों में सिर्फ पूजा पाठ ही है लेकिन ऐसा नही है वेद पढ़िये और जानिए भारत के स्वर्णिम अतीत और विज्ञान को।

संदर्भ–सूचि

1. तैत्तिरीय उपनिषद
2. ऋग्वेद – 10. 34. 13
3. ऋग्वेद – 10. 101. 3
4. शतपथ ब्राह्मण – 1. 6. 1. 3
5. ऋग्वेद – 8. 78. 10
6. ऋग्वेद – 10.34.13
7. अथर्ववेद – 1. 1. 12
8. ऋग्वेद – 10.71. 2
9. कृषि पाराशर – श्लोक नं0–8
10. अथर्वकाण्ड 3 –
11. ऋग्वेद –
12. यजुर्वेद – 16. 38
13. यजुर्वेद – 22. 25
14. यजुर्वेद – 12. 68
15. यजुर्वेद – 12. 68
16. यजुर्वेद – 3. 17. 6.